(अव्यक्त इशारे)
विजयी रत्न बनना है तो प्रीत बुद्धि बनो

1) प्रीत बुद्धि अर्थात् सदा अलौकिक अव्यक्त स्थिति में रहने वाले अल्लाह लोग। जिनका हर संकल्प, हर कार्य अलौकिक हो, व्यक्त देश और कर्तव्य में रहते हुए भी कमल पुष्प के समान न्यारे और एक बाप के सदा प्यारे रहना – यही है प्रीत बुद्धि बनना।

2) प्रीत बुद्धि अर्थात् विजयी। आपका स्लोगन भी है विनाश काले प्रीत बुद्धि विजयन्ती और विनाश काले विपरीत बुद्धि विनश्यन्ती। जब यह स्लोगन दूसरों को सुनाते हो कि विनाश काले विपरीत बुद्धि मत बनो, प्रीत बुद्धि बनो तो अपने को भी देखो - हर समय प्रीत बुद्धि रहते हैं? कभी विपरीत बुद्धि तो नहीं बनते हैं?

3) प्रीत बुद्धि वाले कभी श्रीमत के विपरीत एक संकल्प भी नहीं उठा सकते। अगर श्रीमत के विपरीत संकल्प, वचन वा कर्म होता है तो उसको प्रीत बुद्धि नहीं कहेंगे। तो चेक करो हर संकल्प वा वचन श्रीमत प्रमाण है? श्रीमत प्रमाण चलने वाले सदा विजयी रहते हैं।

4) प्रीत बुद्धि अर्थात् बुद्धि की लगन वा प्रीत एक प्रीतम के साथ सदा लगी हुई हो। जब एक के साथ सदा प्रीत है तो अन्य किसी भी व्यक्ति वा वैभवों के साथ प्रीत जुट नहीं सकती क्योंकि प्रीत बुद्धि अर्थात् सदा बापदादा को अपने सम्मुख अनुभव करने वाले। ऐसे सम्मुख रहने वाले कभी विमुख नहीं हो सकते।

5) प्रीत बुद्धि वालों के मुख से, उनके दिल से सदैव यही बोल निकलेंगे –तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूं, तुम्हीं से बोलूँ, तुम्हीं से सुनूँ, तुम्हीं से सर्व सम्बन्ध निभाऊं, तुम्हीं से सर्व प्राप्ति करुं। उनके नैन, उनका मुखड़ा न बोलते हुए भी बोलता है। तो चेक करो ऐसे विनाश काले प्रीत बुद्धि बने हैं अर्थात् एक ही लगन में एकरस स्थिति वाले बने हैं?

6) जैसे सूर्य के सामने देखने से सूर्य की किरणें अवश्य आती हैं - इसी प्रकार अगर ज्ञान सूर्य बाप के सदा सम्मुख रहते हैं अर्थात् सच्ची प्रीत बुद्धि है तो ज्ञान सूर्य के सर्व गुणों की किरणें अपने में अनुभव करेंगे। ऐसे प्रीत बुद्धि बच्चों की सूरत पर अन्तर्मुखता की झलक और साथ-साथ संगमयुग के वा भविष्य के सर्व स्वमान की फलक रहती है।

7) अगर सदा यह स्मृति रहे कि इस तन का किसी भी समय विनाश हो सकता है तो यह विनाश काल स्मृति में रहने से प्रीत बुद्धि स्वत: हो ही जायेंगे। जैसे विनाश काल आता है तो अज्ञानी भी बाप को याद करने का प्रयत्न जरुर करते हैं लेकिन परिचय के बिना प्रीत जुट नहीं पाती। अगर सदा यह स्मृति में रखो कि यह अन्तिम घड़ी है, तो यह याद रहने से और कोई भी याद नहीं आयेगा।

8) जो सदा प्रीत बुद्धि हैं उनकी मन्सा में भी श्रीमत के विपरीत व्यर्थ संकल्प वा विकल्प नहीं आ सकते। ऐसे प्रीत बुद्धि रहने वाले ही विजयी रत्न बनते हैं। कहाँ भी किसी प्रकार से कोई देहधारी के साथ प्रीत न हो, नहीं तो विपरीत बुद्धि की लिस्ट में आ जायेंगे।

9) जो बच्चे प्रीत बुद्धि बन सदा प्रीत की रीति निभाते हैं उन्हें सारे विश्व के सर्व सुखों की प्राप्ति सदाकाल के लिए होती है। बापदादा ऐसे प्रीत निभाने वाले बच्चों के दिनरात गुण-गान करते हैं। अन्य सभी को मुक्तिधाम में बिठाकर प्रीत की रीति निभाने वाले बच्चों को विश्व का राज्य भाग्य प्राप्त कराते हैं।

10) एक बाप के साथ दिल की सच्ची प्रीत हो तो माया कभी डिस्टर्ब नहीं करेगी। उसका डिस्ट्रक्शन हो जायेगा। लेकिन अगर सच्चे दिल की प्रीत नहीं है, सिर्फ बाप का हाथ पकड़ा है, साथ नहीं लिया है तो माया द्वारा घात होता रहेगा।

11) जब मरजीवा बने, नया जन्म, नये संस्कारों को धारण किया तो पुराने संस्कार रूपी वस्त्रों से प्रीत क्यों? जो चीज़ बाप को प्रिय नहीं वह बच्चों को क्यों? इसलिए प्रीत बुद्धि बन अन्दर की कमजोरी, कमी, निर्बलता और कोमलता के पुराने खाते को सदाकाल के लिए समाप्त कर विजयी बनो। रत्नजड़ित चोले को छोड़ जड़-जड़ीभूत चोले से प्रीत नहीं रखो।

12) कई बच्चे प्रीति जुटा लेते हैं लेकिन निभाते नम्बरवार हैं। निभाने में लाइन बदली हो जाती है। लक्ष्य एक होता है लक्षण दूसरे हो जाते हैं। कोई एक सम्बन्ध में भी अगर निभाने में कमी हो गई तो भी निभाने वाले की लिस्ट में नहीं आ सकते। निभाना माना निभाना। कैसी भी परिस्थिति हो, चाहे मन की, तन की या सम्पर्क की, लेकिन कोई आत्मा संकल्प में भी याद न आये, हर बात में पहले बाप ही याद आये तब कहेंगे प्रीत बुद्धि विजयी।

13) सदा यह स्मृति रहे कि हम कल्प-कल्प के विजयी हैं। अनेक बार यह पार्ट बजा चुके हैं अब सिर्फ रिपीट कर रहे हैं, इस स्मृति से क्या करें, कैसे करें, यह सब कम्पलेन खत्म हो जायेगी और कम्पलीट बन जायेंगे। सदा डबल लाइट स्वरूप के स्मृति की समर्थी हो तो कोई भी असम्भव कार्य सम्भव हो जायेगा।

14) कई बच्चे कहते हैं बाबा आप माया के हाथ काट दो, लेकिन बाप माया के हाथ काटे तो जो काटेगा, वह पायेगा। बाप तो सब कुछ कर सकते हैं। सेकेण्ड का आर्डर है - लेकिन आपका भविष्य कैसे बनेगा? इसलिए जैसे नेपाल में छोटे बच्चों को छुरी हाथ में पकड़ाते हैं, करते खुद हैं लेकिन हाथ बच्चों का रखाते हैं। ऐसे बाप भी बच्चों को कहते बच्चे, सिर्फ हिम्मत का हाथ रखो तो बाप की मदद से मायाजीत विजयी बन जायेंगे।

15) जैसे कोई के ऊपर किसका हाथ होता है तो वह निर्भय और शक्ति रूप हो जाता है, कोई भी मुश्किल कार्य करने को भी तैयार हो जाता है। इसी रीति श्रीमत रूपी हाथ सदा अपने ऊपर अनुभव करो तो कोई भी मुश्किल परिस्थिति वा माया के विघ्न से घबरायेंगे नहीं। हाथ की मदद से, हिम्मत से सामना करना सहज अनुभव करेंगे। चित्रों में भी भक्त के मस्तक पर भगवान का हाथ दिखाते हैं, तो आप बच्चों के मस्तक अर्थात् बुद्धि पर श्रीमत रूपी हाथ अगर है तो हाथ और साथ कारण सदा विजयी रहेंगे।

16) मैं हूँ ही कल्प पहले वाला विजयी - इस स्मृति से अपने को हिम्मतवान बनाओ। हम सर्वशक्तिमान बाप के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिमान हैं, इस स्मृति से हिम्मत आ जायेगी।

अगर कभी मन में कमजोर संकल्प उत्पन्न भी हो जाए तो उसको वहाँ ही खत्म कर शक्तिशाली बनो।

17) सदा विजयी रहने के लिए याद की छत्रछाया में रहो। जो सदा छत्रछाया के अन्दर रहते हैं, वे सर्व प्रकार के माया के विघ्नों से सेफ रहते हैं। उन पर किसी भी प्रकार से माया की छाया पड़ नहीं सकती। यह 5 विकार, दुश्मन के बजाए दास बनकर सेवाधारी बन जाते हैं। जैसे विष्णु के चित्र में दिखाते हैं कि सांप ही शैया और सांप ही छत्रछाया बन गये - यह है विजयी की निशानी।

18) कोई भी सीन सामने आती है तो ड्रामा के हिसाब से सब खेल है, यह स्मृति रहे तो एकरस, विजयी रहेंगे, हलचल नहीं होगी। जब बाप के बन गये तो विजय आपका जन्म सिद्ध अधिकार है, इसलिए यादगार में भी विजय माला गाई और पूजी जाती है।

19) पवित्रता की सच्ची राखी बांधना अर्थात् संकल्प रूप से भी पांचों विकारों पर विजयी बनना। व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा करता है तो काम अर्थात् किसी आत्मा के प्रति अगर व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी। तो सभी व्यर्थ संकल्प बाप के प्यार के पीछे न्योछावर कर दो तब विजयी माला का मणका बन सकेंगे।

20) सदा बाप के साथ का अनुभव करते चलो तो विजयी रहेंगे क्योंकि साथ की अनुभवी आत्मा मुहब्बत में लवलीन रहती है। वह किसी के भी प्रभाव में नहीं आ सकती। सदा समर्थ बाप के संग में रहने वाली समर्थ आत्मा सदा माया को चेलेन्ज कर विजय प्राप्त कर लेती है। माया का आना, यह कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन वह अपना रूप न दिखाये तब कहेंगे विजयी।

21) सदा स्मृति रहे कि हम सर्वशक्तिमान बाप के बच्चे मास्टर सर्वशक्तिमान हैं। सर्व शक्तियां हमारे शस्त्र हैं, अलंकार हैं। अलंकारधारी आत्मा सदा समर्थ वा विजयी रहेगी, वो कभी किसी परिस्थिति में डगमग नहीं होगी। सदा एक बाप दूसरा न कोई - इस स्मृति से महावीर बनो तो विजयी रहेंगे। मस्तक पर विजय का अविनाशी तिलक चमकता रहेगा।

22) अपनी जो भी विशेषतायें हैं, उनको सामने रखो तो अपने आप में फेथ रहेगा। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचो, तो फिर खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे। जब बाप सर्वशक्तिमान है तो उसका हाथ पकड़ने वाले पार पहुँचे कि पहुँचे। चाहे खुद भले कमजोर भी हो लेकिन साथी मजबूत है इसलिए पार हो ही जायेंगे, इस स्मृति से विजयी बनो और दूसरों को भी बनाओ।

23) जिस समय कोई भी परिस्थिति आये तो बाप को साथी बना लो तो अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं हूँ, मेरे साथ विशेष शक्ति है। जहाँ बाप है वहाँ चाहे कितने भी तूफान हों, वह तोफा बन जायेंगे। निश्चय बुद्धि विजयन्ति - इस टाइटिल की स्मृति से विजयी बनो।

24) हर पल उमंग-उत्साह बना रहे तो यही उड़ती कला का आधार है। यह उमंग कई प्रकार के आने वाले विघ्नों को समाप्त कर सम्पन्न बनने में बहुत सहयोग देता है। यह उमंग का शुद्ध और दृढ़ संकल्प विजयी बनाने में विशेष शक्तिशाली शस्त्र बन जाता है, इसलिए

सदा दिल में उमंग-उत्साह को वा इस उड़ती कला के साधन को कायम रखना। उमंग रहे कि मुझे बाप समान सर्व शक्तियों, सर्व गुणों, सर्व ज्ञान के खजानों में सम्पन्न होना ही है।

25) जो संकल्प लिया है उसमें दृढ़ रहना तो विजय का झण्ड लहरा जायेगा। दृढ़ संकल्प से सब सहज हो जाता है इसलिए कभी भी कमज़ोर संकल्प नहीं करना। सदा आगे बढ़ेंगे, विजयी बनेंगे – यह दृढ़ संकल्प करो। सर्व हदों से पार बेहद स्वरूप में, बेहद के सेवाधारी बनकर रहो। एक मेरा बाबा, दूसरा न कोई, इस बेहद के मेरे में अनेक मेरा समा दो तो विजयी बन जायेंगे।

26) संगमयुग खुशियों का युग है, इस समय सर्व विघ्नों को आधाकल्प के लिए विदाई मिल जाती है इसलिए सदा याद रखो कि हम कल्प-कल्प के विजयी रत्न हैं। दिल में विजय का नगाड़ा बजता रहे। जैसे विजय की शहनाईयाँ बजती हैं, ऐसे याद द्वारा बाप से कनेक्शन जोड़ा और सदा यह शहनाईयाँ बजती रहें। अन्दर में खुशी की डांस चलती रहे।

27) सदा विजयी रहने के लिए साक्षी स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करो। साक्षी बन इस देह से कर्म कराओ। यह साक्षी स्थिति सहज पुरूषार्थ का अनुभव कराती है क्योंकि साक्षी स्थिति में किसी भी प्रकार का विघ्न या मुश्किलात आ नहीं सकती। लास्ट में जब चारों ओर की हलचल होगी, तो उस समय साक्षी स्थिति से ही विजयी बनेंगे।

28) अभी माया में कोई दम नहीं है। माया मरी पड़ी है, सिर्फ थोड़ा-सा रहा हुआ श्वांस चल रहा है, अब अन्तिम श्वांस पर सिर्फ निमित्त मात्र विजयी बनना है। किसी भी परिस्थिति में रहते हुए, वायुमण्डल वायब्रेशन की हलचल में सन्तुष्ट रहो तो सन्तुष्ट स्वरुप, श्रेष्ठ आत्मा विजयी रत्न के सर्टीफिकेट के अधिकारी बनती है। सन्तुष्टता का गुण निर्विकल्प, एकरस के विजयी आसन का अधिकारी बना देता है।

29) सदा विजय के उमंग-उत्साह में रहो। नाउम्मीदी के संस्कार न हों। कोई भी मुश्किल कार्य इतना सहज अनुभव हो जैसे कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि अनेक बार यह कर चुके हैं। कोई नई बात नहीं कर रहे हैं। कई बार की हुई को रिपीट कर रहे हैं, यह स्मृति विजयी बना देगी।

30) कभी कोई स्वभाव संस्कार को देखते यह संकल्प न आये कि पता नहीं यह परिवर्तन होगा या नहीं होगा। नाउम्मीद को सदा के लिए उम्मीद में बदल दो। निश्चय अटूट है तो विजय भी सदा है। निश्चय में जब क्यों, क्या आता है तो विजय अर्थात् प्राप्ति में भी कुछ न कुछ कमी पड़ जाती है तो सदा उम्मीदवार, सदा विजयी बनो और विजयी बनाओ।

31) सदा बाप की छत्रछाया के नीचे रहो तो माया से सेफ, सदा मौज में रहेंगे। यह पढ़ाई बहुत ऊंची है, लेकिन ऊंची पढ़ाई होते हुए भी निश्चय है कि हम विजयी हैं ही, पास हुए पड़े हैं। कल्प- कल्प की पढ़ाई है, नयी बात नहीं है इसलिए सदा मौज में रहो और दूसरों को भी मौज में रहने का सन्देश देते रहो। मन्सा महादानी बन शक्तियों का दान करते चलो तो मन के संकल्पों पर सेकण्ड में विजयी बन जायेंगे।